Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी टेस्ट-1 (कबीर) आदर्श उत्तर कुंजी पूर्णांक 20

प्रश्न 1. कबीर के दोहे हमें श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। इस कथन पर अपना मत लिखिए।

उत्तर: सन्त कबीर ने अपने दोहों में श्रेष्ठ मानवीय गुणों को अपनाने की प्रेरणा दी है, यह कथन सर्वथा सही है। वे कहते हैं कि, "सब कुछ प्रभु का है मेरा कुछ भी नहीं" यह त्याग की भावना का आदर्श रूप है। विवेकपूर्वक अवगुणों से बचकर गुणों को धारण करना, हर प्रकार के अहंकार का त्याग, जात और धर्म की अपेक्षा ज्ञान से साधुता का मूल्यांकन करना, सज्जनों की संगति करना, सन्तोषपूर्वक जीवन बिताना तथा मधुर वाणी का प्रयोग करना ये सभी श्रेष्ठ जीवन मूल्य हैं, जिनको धारण करने की प्रेरणा कबीर ने दी है।

प्रश्न 2. हंस में कौन-सा विशेष गुण माना गया है? हंस का यह गुण आपको क्या संदेश देता है?

उत्तर: ऐसा विश्वास चला आ रहा है कि हंस पानी और दूध के मिश्रण में से दूध को ग्रहण करके पानी को त्याग देता है। हंस का अर्थ ज्ञानी या विवेकी पुरुष से भी लगाया जाता है। हंस का यह गुण हमें संदेश देता है कि गुणों और अवगुणों से युक्त संसार में हमें गुणों को ग्रहण करते हुए अवगुणों का त्याग करते रहना चाहिए। ऐसा करने से हमारा जीवन सुखी हो सकता है।

प्रश्न 3. "जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥" पंक्तियों को भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस दोहे में कबीरदास साधु की परीक्षा उसकी जाति से नहीं बल्कि उसके ज्ञान के आधार पर करने का सन्देश दे रहे हैं। साधु यदि ज्ञानी और सदाचारी है तो उसकी कोई

भी जाति हो, वह सम्मान का पात्र है, तलवार को खरीदने वाला पारखी व्यक्ति तलवार के लोहे और उसकी धार के आधार पर उसका मूल्य निश्चित किया करता है। उसकी सुन्दर म्यान के आधार पर नहीं । कबीर का आशय यह है कि जाति के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन करना अज्ञान और अन्याय की निशानी है।

प्रश्न 4. कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए

उत्तर. हिन्दी साहित्य की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर भक्तिकाल के महान समाज सुधारक थे। कबीर दास जी का जन्म 1398 ई. में काशी में हुआ। उनका लालन-पालन नीमा और नीरू नामक एक जुलाहा दंपत्ति ने किया। उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत, धार्मिक आडम्बर, ऊँच-नीच एवं बहुदेववाद का कड़ा विरोध करते हुए 'आत्मवत् सर्वभूतेषु के मूल्यों को स्थापित किया। कबीर की प्रतिभा में अबाध गति व तेज था। उन्हें पहले समाज-सुधारक बाद में कवि कहा जाता है। भाषा पर असाधारण अधिकार होने के कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को वाणी का डिक्टेटर कहा है। कबीरदास जी की भाषा में अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द मिले हुए थे इसलिए विद्वानों ने उनकी भाषा को सधुक्कड़ी भाषा या पंचमेल खिचड़ी भी कहा है। कवि ने अपनी सपाटबयानी एवं तटस्थता से समाज-सुधार के लिए जो उपदेश दिए उनका संकलन उनके शिष्य धर्मदास ने किया।

कबीर की रचनाओं के संकलन को बीजक कहा जाता है। बीजक के तीन भाग साखी, सबद और रमैनी हैं।। संत काव्य परम्परा में उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। 1528 ई. में कबीर की मृत्यु हो गयी।

प्रश्न 5. सप्रसंग व्याख्या करो- (कोई दो)

(अ)

त्याग तो ऐसा कीजिए, सब कुछ एकहि बार।

सब प्रभु का मेरा नहीं, निचे किया विचार॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कवि त्याग के आदर्श स्वरूप और महत्व बता रहे हैं।

व्याख्या- कबीर कहते हैं कि मनुष्य को एक बार दृढ़ निश्चय करके अपना सब कुछ त्याग

देना चाहिए। उसकी यह भावना होनी चाहिए कि उसे प्राप्त सारी वस्तुएँ और उसका शरीर भी सब कुछ ईश्वर का है। ईश्वर को सर्वस्व समर्पण करके मोह और अहंकार से मुक्त हो जाना ही आदर्श त्याग है।

विशेष-

(i) 'मैं और मेरा' की भावना का त्याग ही मनुष्य को महान् बनाता है, यह संकेत है।

(ii) 'सब कुछ ईश्वर का है' यह विचार रखने वाला ही सच्चा त्यागी बन सकता है। यह सन्देश व्यक्त हुआ है।

(iii) भाषा सरल और शैली उपदेशात्मक है।

(ब)

छोड़े जब अभिमान को, सुखी भयो सब जीव।

भावै कोई कछु कहै, मेरे हिय निज पीव॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कबीरदास सच्चा सुख और परमात्मा की प्राप्ति के लिए अहंकार का त्याग करना आवश्यक बताया है।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि जब व्यक्ति अपने मन से अभिमान को निकाल देता है तो उसका मन परम आनंद की प्राप्ति करता है और वह सुखी हो जाता है। कवि कहते हैं कि भले ही मुझे इसके लिए कोई कुछ भी कहे, मैंने अपने मन से अभिमान को निकाल दिया है। अब मेरे हृदय में मेरे प्रियतम अर्थात मेरे प्रभु मुझे प्राप्त हो गए हैं।

विशेष-

(i) अहंकार के रहते जीव स्वयं को परमात्मा से भिन्न समझता है और दु:खी रहता है। अहंकार का त्याग करने पर ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है।

(ii) आत्मा और परमात्मा एक है।

(iii) भाषा सरल है, शैली भावात्मक है॥

(iv) 'कोई कछु कहै' में अनुप्रास अलंकार है।

(स)

मारिये आसा सांपनी, जिन डसिया संसार॥

ताकी औषध तोष है, ये गुरु मंत्र विचार॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कबीरदास के साखियों से ली गयी है। इस साखी में कवि ने 'आशा' को सर्पिणी के समान बताते हुए उससे बचने का उपाय संतोष और गुरु उपदेश को बताया है।

व्याख्या- कबीर कहते हैं कि कबीर दास जी मनुष्य की अनंत इच्छाओं की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि इस आशा रूपी नागिन ने सारे संसार को डस रखा है। अर्थात मन में उठने वाली अनेकानेक आशाएं नागिन के समान है और उसने प्रत्येक मनुष्य को डस लिया है, इस आशा रूपी नागिन से बचने का केवल संतोष या आत्म संतुष्टि उपाय है। यही गुरु का श्रेष्ठ मंत्र है। इसी से आशा रूपी नागिन से बचा जा सकता है।

विशेष-

(i) 'सन्तोषी सदा सुखी' इस लोकोक्ति का इस साखी में समर्थन किया गया है।

(ii) भाषा सरल है, शैली आलंकारिक है। 'गुरुमंत्र' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

(iii) आसा सांपनी' में रूपक अलंकार है।

इस प्रश्न-पत्र की आदर्श उत्तर-कुंजी आप 03:00 बजे बाद इस लिंक https://tinyurl.com/y66j6z98 से डाउनलोड कर सकते हैं।

कक्षा 12 (अनिवार्य हिन्दी - सृजन) परीक्षा की दृष्टि से सरल व आसान व्याख्या एवं हल प्रश्न उत्तर सहित Free PDF Download इस से कीजिए- https://tinyurl.com/y6tpcbsp

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg